डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(नेशनल अकादमी ऑफ़ लेटर्स)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

'12वें दिल्ली अंतरराष्ट्रीय कला उत्सव' के दौरान काव्यपाठ

आदिवासी भाषाओं के कवियों ने किया भावविभोर

नई दिल्ली, 5 दिसंबर 2018 : साहित्य अकादेमी द्वारा अकादेमी सभाकक्ष में बारहवें अंतरराष्ट्रीय कला उत्सव (1–10 दिसंबर 2018) के दौरान आदिवासी कवि सम्मिलन का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में चार आदिवासी भाषाओं के कवियों ने अपनी कविताओं की प्रस्तुति से श्रोताओं को भावविभोर कर दिया। संताली, बोडो, मिसिंग तथा मुंडारी भाषा के कवियों सर्वश्री मदन मोहन सोरेन, देतसुङ सोरगियारी, जितेन पायेङ और नंदलाल सिंह ने अपनी कविताएँ अपनी मातृभाषाओं में सुनाईं तथा उनके हिंदी/अंग्रेजी अनुवादों का भी पाठ किया। पठित कविताओं में आदिवासी सभ्यता–संस्कृति से जुड़ी अभिव्यक्तियों की सुंदर प्रस्तुति थी। कवियों ने प्रकृति के साथ आदिवासी जीवन के तारतम्य और आधुनिक विकास के कारण आए बदलावों को अपनी कविताओं में सूक्ष्मता से पिरोया था। उनलोगों ने कविता–पाठ के पहले अपने आदिवासी समुदाय, भाषा और साहित्य–संस्कृति के बारे में भी श्रोताओं को संक्षेप में बताया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए. अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ देवेंद्र कुमार देवेश ने अंत में औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने सभी प्रतिभागी कवियों को कला उत्सव के आयोजकों की तरफ से स्मृति चिह्न प्रदान कर उनका अभिनंदन किया। कार्यक्रम में प्रतिष्ठित लेखकों डॉ. दिविक रमेश (हिंदी), डॉ. अनिल कुमार बोरो (बोडो), डॉ. टी. जी. प्रभाशंकर प्रेमी (कन्नड) तथा मोहम्मद खलील (उर्दू) सहित आदिवासी भाषा–साहित्य के प्रेमियों की अच्छी उपस्थिति थी।

(के. श्रीनिवासराव)

रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001, दूरभाष : +91-11-2338 7064, 2307 3002, फैक्स : +91-11-2338 2428
Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi-110 001, Phone : +91-11-2338 7064, 2307 3002, Fax : +91-11-2338 2428
E-Mail : secretary@sahitya-akademi.gov.in, Website : http//www.sahitya-akademi.gov.in